"नालंदा महाविहार"

Mandip Kumar Chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. Of A.I.H. & Archaeology

Patna University,Patna-800005

M.A. Semester-II

Paper/CC – (8) Concept and Technique of Archaeology,Pre and Proto History of Africa & Archaeology Sites

नालन्दा महाविहार के खण्डहर जिला मुख्यालय बिहारशरीफ एवं राजगीर के बीच बड़गाँव नामक गाँव के दक्षिण में स्थित है। नालंदा संस्कृत शब्द नालम+दा से बना है। संस्कृत में नालम का अर्थ कमल होता है, कमल ज्ञान का प्रतीक है। नालम+दा= अर्थात कमल देना वाला यानि ज्ञान देने वाला। कालक्रम से यहाँ महाविहार की स्थापना के बाद इसका नाम नालंदा महाविहार रखा गया। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान ने नालंदा की यात्रा नही की थी परन्तु ह्वेनसांग ने हर्षवर्द्धन के राज्यकाल (606-647 ई०) में यात्रा की तथा अपने संस्मरण 'सि-यू-की' में नालंदा की भूरी-भूरी प्रशंसा की है। वह यहाँ का विद्यार्थी भी था।

ह्वेनसांग के अनुसार नालंन्दा महाविहार की स्थापना शक्रादित्य नामक राजा ने की थी। बाद मे उसके वंश के राजाओ बुद्धगुप्त, तथागत गुप्त, बालादित्य ने इसकों संरक्षण प्रदान किया। शक्रादित्य की पहचान कुमारगुप्त प्रथम (415-455) ई० से की गई है। नालंदा महाविहार को पाल सम्राटो का भी संरक्षण प्राप्त था। यहाँ से प्राप्त एक अभिलेख के अनुसार स्पस्ट होता है कि पाल सम्राट देवपाल ने इन्डोनेसिया (जावा) के शैलेन्द्र वंशी सम्राट बालपुत्र देव

के अनुरोध पर उन्हे नालंदा में एक बिहार बनवाने की अनुमति प्रदान की थी। नालंदा के संबंध में हमें अंतिम सुचना तिब्बती यात्री धर्म स्वामी से मिलती है। धर्मस्वामी 1234-36 ई० मे नालंदा का विद्यार्थी था। उसके अनुसार महाविहार मे आचार्य राहुल श्री भद्र 90 विद्यार्थियों को व्याकरण पढाते थे। धर्मस्वामी भी उनमे एक था। उसने नालंदा महाविहार पर तुर्क आक्रमणों का आँखों देखा हाल प्रस्तुत किया है।

नालंदा के महत्व को भू-गर्भ से निकालकर प्रकाशित करने का श्रेय जनरल कनिंघम को है। इसके पुर्व फ्रांसिस बुकानन ने भी इसकी प्राचीनता को समझा था। कनिंघम के पश्चात् ब्रोडले ने यहाँ कुछ अनियमित खुदाई कराई थी। परन्तु विस्तृत उत्खनन 1936-37 ई० में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की देख-रेख मे कई वर्षो तक चला।

पाँचवी शताब्दी के मध्य से बारहवी शताब्दी के उत्तरार्ध लगभग सात सौ वर्षो तक अपनी ज्ञान ज्योति से आलोकित करने वाला अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, बौद्ध कला का सर्वश्रेष्ठ विद्या केन्द्र प्राचीन नालंदा महाविहार का भवनावशेष भारतीय संस्कृति के एक गौरवशाली अध्याय के रूप मे आज भी बिहार के गौरवशाली वैभव में चार-चाँद लगा रहा है। इस महाविहार ने विद्या और संस्कृति के रूप मे इतनी ख्याति प्राप्त की कि यहाँ भारत के चारो ओर से पैदल चलकर ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से विद्यार्थी आते थे। मध्य एशिया, चीन, कोरिया और जावा के लोग भी इसकी ओर आकृष्ठ हुए। इस महाविहार में भिक्षु निवास, व्याख्यानगृह, पुस्तकालय, वेधशाल आदि थे जिनके अवशेष पुरातात्विक उत्खनन मे प्राप्त हुए है। ये सब भवन कई तल्लो के थे।

ह्वेनसांग के अनुसार यहाँ रहकर पढ़ने वाले छात्रो की संख्या दस हजार थी। इनमें अध्यापको की संख्या एक हजार थी, जिनमे धर्मपाल, चंद्रपाल, गुणमति, स्थिरमति, शीलभद्र, धर्मकीर्ति, शांतिरक्षित, और पदम संभव जैसे

विख्यात विद्वान थे। नालंदा महाविहार के आचार्यो, भिक्षुओ एवं उनके शिष्यों का व्यय-वहन 100 गाँवो से होने वाली आय से होती थी। यह महायान बौद्ध विहार था। इसमे प्रवेश के अत्यंत कठोर नियम थे। प्रवेश पाने से पूर्व आवश्यक था कि प्रवेशार्थी प्राचीन और नवीन साहित्य से परिचित हो। प्रवेश द्वार पर ही उनसे कठिन प्रश्न किये जाते थे और उनका उत्तर कठिनता से दस मे दो-तीन दे पाते थे। शेष को निराश लौट जाना पड़ता था।

नालंदा मे व्याख्यान, प्रवचन, वाद-विवाद और विमर्श के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा के कई विषय थे- बौद्ध धर्म के महायान, बज्रयान, सहजयान आदि सम्प्रदायों के धार्मिक साहित्य, तंत्र, ज्योतिष। इनके अतिरिक्त दर्शन, साहित्य, व्याकरण और कला की शिक्षा की भी व्यवस्था थी। महाविहार के अंतर्गत एक विशाल पुस्तकालय था जो रत्नसागर, रत्नोदधि, रत्नरंजन, नामक तीन भवनो में स्थापित था। रत्नोदधि नौ तल्लों का था। जिसमें प्रज्ञापारमिता वर्ग के धर्मिक ग्रंथ और साहित्य रखे गये थे। धर्मपाल का शिष्य इस पुस्तकालय का पुस्तकालयाध्यक्ष था।

नालंदा के विषय मे जानकारी सर्वप्रथम 1812 ई० मे हैमिल्टन ने दी थी। वहाँ उन्हे कुछ ब्राह्मण और बौद्ध मूर्तियाँ मिली थी। नालंदा महाविहार के अन्वेषण कार्य सर्वप्रथम जनरल कनिंघम ने सन 1862 ई० में प्रारंभ किया और ह्वेनसांग द्वारा वर्णित नालंदा की महत्ता को खोज निकाला। 1870 ई० मे ब्रैड़ली ने वहाँ की चैत्य सं०-12 की खुदाई की और एक लेख प्रकाशित करवाया। तत्पश्चात देश-विदेश के बौद्ध यात्री नालंदा मे उमड़ पडें। नालंदा के जीर्णोद्वार हेतू सन् 1915 ई० मे खुदाई का काम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने अपने हाथों मे लिया। पुरातत्व निभाग के तात्कालीन निदेशक सर जान मार्शल तथा स्पुनर के निर्देशन में यह कार्य प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात् हीरानंद शास्त्री के सहयोग से इस प्राचीन महाविहार के प्रमुख भागो को प्रकाश मे लाया जा सका।

1940 ई० मे उन्होने इस पर अपना प्रतिवेदन सौपा। पुरात्त्व विभाग ने यहाँ 20 वर्षो तक उत्खनन कार्य करवाया।

नालन्दा का मुख्य उत्खनित स्थल 480×120 मीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। इसमे स्थापत्य अवशेषों की दो कतारे है। एक कतार बौद्ध विहारो की है जबकि दुसरी कतार बौद्ध मंदिरो की है। नालंदा के पुरावशेषों मे सर्वाधिक महत्वपुर्ण एवं प्राचीन स्तुप स्थल संख्या -3 है। यह स्तुप एक के बाद एक कम से कम सात बार बना है। सबसे पहले बना स्तुप एक वर्गाकार स्थापत्य है। इसमें 50×33×12 से०मी० की अधपकी ईटो का व्यवहार हुआ है। यह स्तुप नालन्दा से मिले स्थापत्य अवशेषो मे प्राचीनतम है। इस स्तुप को ढ़कते हुए दुसरे, तीसरे एवं चौथे स्तुप विभिन्न कालो मे बनाये गए है। पाँचवा स्तुप अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आकर्षक है। इस स्तुप की दीवारो पर बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाओ पर आधारित गचकारी की मूर्तिया बनाई गई है। इसका काल छठी शताब्दी का प्रथम चरण माना जा सकता है। पाँचवे स्तुप को ढकते हुए छठे एवं सातवे स्तुप का निर्माण किया गया है।

उत्खनन से प्राप्त चिन्हो से ज्ञात होता है कि नालंदा महाविहार का कम से कम सात बार पुननिर्माण या विस्तार हुआ होगा। उत्खनन के बाद 13 मठ प्रकाश में आये है। इन मठो मे विद्यार्थीयो के रहने के लिए कमरे बने थे। हर मठ चार मंजिला था। इन मठो के आमने-सामने मंदिरो की श्रृंखला थी। उत्खनन के संबंध मे यहाँ एक सुरक्षात्मक प्राचीर से घिरे क्षेत्र मे दस विहारो के अवशेष मिले है, जो भिक्षुओ के निवास के लिए थे। इनके सामने विशाल स्तुप था जिसके अवशेष अभी भी देखे जा सकते है। इस क्षेत्र से बुद्ध की अनेक मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई है। चालीस फुट ऊँची पीतल, ताँबे की वहाँ बुद्ध की आदमकद मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई है जो नालंदा संग्रहालय मे सुरक्षित है। अनेक अभिलेख, जिनमे ईटो पर निदान सूत्र अंकित है, तथा मिट्टी की मुहरे, सिक्के, ताम्रपत्र प्राप्त हुये, जिन पर नालंदा महाविहार आर्य, भिक्षु संघ लिखा है।

नालंदा महाविहार के अवशेष जिनमे एक बड़ी संख्या बौद्ध चैत्यो और पूजन गृहो की है। यहाँ के खुदाई में निकले पूजा स्थल, मठ, आश्रम, चित्रकला, व्याख्यान कक्ष आदि विस्तृत क्षेत्र में है।

गुप्तकाल मे स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय को तुर्क आक्रामक मुहम्मद बख्तियार खिलजी ने सन 1198 ई० मे आक्रमण कर भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक इस महाविहार को नष्ट कर दिया।